कथा सरिता

शिवाजी को बुढ़िया की सीख

उन दिनों छत्रपति शिवाजी मुगलों के विरुद्ध छापामार युद्ध लड़ रहे थे। एक रात वह थके-मांदे एक बुढ़िया की झोपड़ी में जा पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्होंने बुढ़िया से कुछ खाने के लिए मांगा। बुढ़िया के घर में उस समय थोड़ा चावल बचा हुआ था। उसने फौरन शिवाजी के लिए प्रेमपूर्वक भात पकाया और परोस दिया।

शिवाजी को बहुत भूख लगी हुई थी। झट से भात खाने की आतुरता में उनकी अंगुलियां जल गईं। हाथ की जलन शांत करने के लिए वह फूंक मारने लगे। उन्हें ऐसा करता देख बुढ़िया ने उनके चेहरे की ओर देखा और बोली, `सिपाही! तेरी सूरत शिवाजी जैसी लगती है, साथ ही लगता है तू उसी की तरह मूर्ख भी है।' बुढ़िया की यह बात सुनकर शिवाजी स्तब्ध रह गए। उन्होंने बुढ़िया से पूछा `आप ज़रा शिवाजी की मूर्खता के साथ मेरी भी कोई मूर्खता बताएं।'

बुढ़िया ने उत्तर दिया, `तूने किनारे-किनारे से थोड़ा-थोड़ा ठंडा भात खाने की बजाय बीच के गरम भात में डाथ डाला और अपनी अंगुलियां जला लीं। ठीक यही मूर्खता शिवाजी करता है। वह दूर किनारों पर बसे छोटे-छोटे किलों को आसानी से जीतते हुए शक्ति बढ़ाने की बजाय बड़े किलों पर धावा बोल देता है और फिर हार जाता है।

शिवाजी को अपनी रणनीति की विफलता का कारण समझ में आ गया। उन्होंने बुढ़िया की सीख मान ली और पहले छोटे-छोटे लक्ष्य बनाए। उन्हें पूरा करने की रणनीति अपनाई। वह सफल रहे और उनकी शक्ति बढ़ती गई। अंततः वह बड़ी विजय पाने में भी समर्थ हुए। उस बुढ़िया की बात सही साबित हुई।

सच्चा सद्गुरु

एक युवक के मन में योग-साधना के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई। वह इसके लिए गुरु की खोज करने लगा। इस खोज में भटकते हुए उसने एक स्थान पर देखा कि एक फकीर पेड़ के नीचे बैठा ईश्वर-स्मरण कर रहा है। उसने उसके पास पहुंचकर निवेदन किया, `बाबा! आप योग-साधना के जानकार हैं। मुझे कुछ सूत्र बताइए ताकि मैं भी अपनी छिपी हुई शक्तियों को जान सकूं।'

फकीर ने युवक की ओर देखा और कहा, `योग-साधना में दीक्षा देने का अधिकार केवल सद्गुरु को है। वही तुम्हारी कामनाओं को तृप्त कर सकते हैं। मैं तो बस तुम्हें सद्गुरु की पहचान बता सकता हूँ।' यह सुनकर युवक बोला, `आप पहचान ही बता दें।'

फकीर ने कहा, `तुम्हारे सद्गुरु प्रकाश-पुरुष हैं। बस तुम उन्हें ढूंढ़ते रहो। एक दिन तुम उन्हें ऐसे ही किसी पेड़ के नीचे बैठा हुआ पाओगे। उनकी देह से प्रकाश निकल रहा होगा। उनकी आँखों में तुम्हारे लिए वात्सल्य होगा। बस तुम उन्हें ढूंढ़ो।'

युवक सद्गुरु की तलाश में चल पड़ा। दिन-मास-वर्ष बीत गए। आखिर वह इसी खोज में भटकते हुए एक पेड़ के पास पहुंचा। वहां दिव्य प्रकाश फैला था। एक वृद्ध फकीर प्रकाश-पुरुष के रूप में उसके सम्मुख थे। युवक फकीर के चरणों में गिर पड़ा। फकीर ने उसे बड़े प्यार से अपनाया। युवक ने फकीर को गौर से देखा तो पाया यह वही फकीर थे, जिन्होंने उसे सद्गुरु से मिलने का मार्ग सुझाया था।

युवक ने पूछा, `बाबा! आपने मुझे इतना भटकाया क्यों? पहले ही क्यों नहीं अपना लिया?' फकीर ने कहा, `बेटा, मैं तो वही हूँ, हाँ, तुम अब बदल गए हो। पहले तो तुममें मात्र कौतुक था। अब तुममें शिष्यत्व भी जाग उठा है। तभी तो तुम मुझे पहचानने में समर्थ हो गए।'

प्रसिद्धि का त्याग

गाँधी जी उन दिनों सेवाग्राम आश्रम में रह रहे थे। दूर-दूर से लोग उनसे मिलने आते और अपने मन की बात उनके सामने रखकर उनसे उसका समाधान ले जाते। एक बार गांधी जी का एक परिचित धनी व्यक्ति उनसे मिलने पहुंचा। उसने दुःखी मन से कहा, `महात्मा जी, आज समय बेईमानों का ही रह गया है। आप तो जानते ही हैं कि मैंने अमुक नगर में कितने प्रयत्नों के बाद लाखों रुपये खर्च कर धर्मशाला का निर्माण कराया था। अब कुछ गुटबाजों ने मुझे प्रबंध समिति से ही हटा दिया है। आप देखिए, इन दिनों ऐसे लोग समिति में आ गए हैं जिनका धन की दृष्टि से तो योगदान नगण्य ही है। मुझे तो समझ में नहीं आ रहा है कि मैं करूँ तो क्या करूँ? इस संबंध में न्यायालय में मामला दर्ज कराना उचित नहीं होगा'।

उसकी बात सुनकर गांधी जी ने कहा, `तुमने धर्मशाला धर्मार्थ बनवाई थी या उसे व्यक्तिगत सम्पत्ति बनाए रखने के लोभ में ऐसा किया था? देखो, असली धार्मिक कर्म तो वह होता है, जो बिना लोभ-लालच की इच्छा से किया गया हो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम अभी तक नाम और प्रसिद्धि का लालच नहीं त्याग पाए हो। इसलिए तुम धर्मशाला में प्रबंध समिति के पद से हटाए जाने से दुःखी हो। मेरी बात मानो तो अब तुम धर्मशाला की प्रबंध समिति में पद और नाम की प्रसिद्धि के मोह को त्याग दो। इससे तुम्हारे मन को अपार शांति प्राप्त हो सकेगी। मनुष्य को जीवन में सदा निष्काम कर्म की ओर बढ़ना चाहिए।'

गांधी जी की बात सुनकर उस व्यक्ति ने संकल्प लिया कि वह भविष्य में किसी भी पद अथवा नाम के लालच में नहीं पड़ेगा।

गुप्त दान का महत्व

एक बार सरदार वल्लभ भाई पटेल कांग्रेस के लिए फंड एकत्रित करने रंगून गए। वहां उन्होंने अनेक व्यक्तियों से सहयोग मांगा। उन्होंने देखा कि जब वे चीनियों से चंदा मांगते थे तो वे सूची में अपना आंकड़ा नहीं चढ़ाते थे, बल्कि चुपके से अपने घरों के अंदर से श्रद्धनुसार चंदा लेकर जमा करा देते थे। अधिकतर चीनियों को ऐसा ही करते देख उन्होंने एक चीनी से पूछा, `भैय्या, आप लोग चंदा तो दे देते हो, किंतु उसे सूची में नहीं डलवाते। क्या आपके यहां ऐसा कोई रिवाज है? बिना सूची में चढ़ाए यह तो पता हीं नहीं चलेगा कि आपने कितना चंदा दिया।'

यह प्रश्न सुनकर वह चीनी मुस्कराया और बोला- नहीं, हमारे यहां ऐसा कोई रिवाज नहीं है, पर एक मान्यता अवश्य है।' यह सुनकर सरदार पटेल ने उस मान्यता के बारे में सुनने की इच्छा जताई। वह बोला, `हमारे यहां दान की रकम को धर्म ऋण कहते हैं। सूची में दान की रकम लिख दें और संयोगवश हमारे पास उतनी रकम न हो तो उसे चुकाने में जितने दिनों की देर होती है, उतने दिन का ऋण हम पर चढ़ जाता है। धर्म ऋण का पाप सबसे बुरा माना जाता है।

दूसरी बात यह कि, हम यह समझते हैं कि अच्छे कार्य के लिए गुप्त दान से हमारे ऋण उतरते हैं। यदि हम सूची में चढ़ाकर या दूसरों को बताकर दान दें तो दान का महत्व घट जाता है, इसलिए चंदे या फंड के लिए जो रकम देनी हो उसे हम तुरंत देकर ऋणमुक्त होने की कोशिश करते हैं। धर्म ऋण का महत्व व उपयोगिता तभी श्रेष्ठ होती है जब वह पूरी गरिमा, श्रद्धा और सच्चे मन से दी जाए।' यह सुनकर सरदार पटेल बेहद खुश हुए।

काठमाण्डू-नेपाल। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'ओम शांति भवन' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री व सभासद् शेर बहादुर देउवा, पूर्व स्पीकर तारानाथ रानाभाट, ब्र.कु.राज दीदी, ब्र.कु.रामसिंह व ब्र.कु.तिलक।

फरीदाबाद-नीलम वाटा रोड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में मंचासीन हैं विपसना साधना संस्था,उत्तर भारत के ट्रस्टी व बौद्ध धर्म के अनुयायी डॉ. लाल सिंह, ऑल इंडिया मुस्लिम मेव विकास परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मौलाना जमालुद्दीन, कम्युनिटी रेडियो पलवल से मुकेश गम्भीर, एडवोकेट मोहित भंडारी, ब्र.कु. सरोज व अन्य।

जयपुर-वैशाली नगर। इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुषमा व अन्य।

नंगल-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशाल सभा में उपस्थित गणमान्य जनों को योगानुभूति कराते ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. मीना व अन्य।

सिवान-बिहार। मातेश्वरी जगदम्बा की 50वीं स्मृति दिवस पर पुष्पांजली अर्पित करते हुए बिभूति भूषण,रिजनल मैनेजर,सेल, राजेश्वर सिंह मुखिया व ब्र.कु. सुधा।

हरिद्वार। भूमि पूजन के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. महामण्डलेश्वर स्वामी श्याम सुंदर दास। साथ हैं ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. रमेश,इंजीनियर व अन्य।